Nibandha Mala (Bimonthly Hindi Journal)
ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

डॉ. विष्णु कुमार[1]

[1]*सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं*

शोध-साराशं

शिक्षा में शोध प्रबन्धों का शैक्षिक महत्त्व उनकी सार्थकता का द्योतक होता है। प्रस्तुत शोध कार्य जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना हैं, जो शिक्षा के विभिन्न आयामों को प्रभावित कर सकता है। प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर, परिवेश, विद्यालयों के प्रकार, लिंगात्मक प्रभाव व संकायों के प्रकारों का प्रभाव अधिकांशतः नहीं पड़ता है। सभी परिणामों को तथ्यों की कसौटी पर कसते हुए वर्तमान परिपेरक्ष्य में हम यह कह सकते हैं कि 20वीं शताब्दी कें संसार में जहां विभिन्न परिवर्तन आ रहे है, वही नैतिक मूल्यों में गिरावट दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की इस गति से होने वाला पतन समाज को विशेष रूप से प्रभावित कर रहा है, क्योंकि विद्यार्थी ही राष्ट्र के भावी नागरिक हैं। अध्यापक जो कि राष्ट्र के इस भावी नागरिक का निर्माण करते हैं, उनसे यह आशा की जाती है कि वे विद्यार्थियों में इन नैतिक मूल्यों (नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य व राजनैतिक मूल्य) का विकास करेंगे। तभी हम एक आदर्श समाज की स्थापना के लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे और नैतिक मूल्यों को अपने स्थान पर पुनः स्थापित कर पाएंगे। इसके लिए शिक्षकों एवं माता-पिता को नैतिक गुणों के शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिये। बच्चे हमेशा अनुकरण से ही सीखते हैं। अतः माता-पिता एवं अध्यापकों को उनके सम्मुख नैतिक गुणों के आदर्श प्रस्तुत करने चाहिये। अतः यह कहा जा सकता हैं कि यदि बालक का पारिवारिक व विद्यालय वातावरण नियमित, अनुशासित

Scanned by CamScanner